सत्य दर्शन का आधार किताबें

रामअवतार बैरवा

चाहे पत्र-पत्रिकाएं हों, मंच हो या सामाजिक माध्यम, साहित्य में गुटबंदी हमेशा से रही है । आजादी के पहले का साहित्य इसीलिए सबकी पसंद और श्रेष्ठ रहा कि वहाँ अनेक पत्र-पत्रिकाएं होने के बावजूद गुटबाजी का अक्ष सिर्फ़ और सिर्फ़ आजादी रहा । आज अपनी बात को ऊपर रखने , अपनी बात को मनवाने की लड़ाई प्रथम हो चली है । साहित्य भी मनोरंजन पर आ टिका है । प्रचार प्रसार के माध्यम बहुत हैं पर सामग्री का अभाव है । लोग लिखना अधिक चाहते हैं, पढ़ना कम । गंभीर साहित्य के प्रति युवाओं का रूख बहुत कम हो चला है । अध्ययन के लिए मजबूरीवश पढ़ना पड़ता है । आखिर क्यों आज की पीढ़ी का साहित्यिक आकर्षण कम हो चला है । विद्यालय और विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों से साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं मिटती-सिमटती जा रही है । माना इंटरनेट और सामाजिक माध्यमों पर हर साहित्य और साहित्यकारों पर सामग्री मौजूद है । यह बात अलग है कि वो कितनी सच है पर साहित्य है, इतना भी पर्याप्त है । आज अगर गूगल या अन्य माध्यमों पर "बच्चन" टाइप किया जाता है तो पहले अमिताभ बच्चन आता है फिर अभिषेक बच्चन फिर जया बच्चन, अंत में कहीं जाकर हरिवंशराय बच्चन का नाम छिपा हुआ मिलता है । गूगल और इंटरनेट का प्रयोग युवा पीढ़ी ज्यादा करती है और युवा पीढ़ी को साहित्य से ज्यादा मतलब रह ही नही गया है । आज जो सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का क्षरण दिखाई दे रहा है, युवा मानस मैं जो तनाव दिखाई दे रहा है, उसका मुख्य कारण साहित्य के प्रति लगाव का अभाव है । अन्य तरह के साहित्य की तो बात ही अलग है, आज की पीढ़ी में एक प्रतिशत युवाओं ने भी गीता या रामायण का अध्ययन नहीं किया होगा । अकेली रामायण व्यक्ति की हजार समस्याओं का समाधान है और गीता आकाश छूने की तमन्ना पूर्ण करती है । घर में दीप जलाने से रोशनी ही नहीं फैलती, मन के कई भाव रोशन होते हैं, लक्ष्यों को नये पंख लग जाते हैं । सदियों से ये पर्व-त्यौहार यूं ही नही मनाए जा रहेहैं , ये हमारी संस्कृति को तो नयी अस्मिता देते ही हैं, हमें सांस्कृतिक रूप से एक भी रखते हैं । हर शायर , हर कवि ने इन पर्व-त्यौहारों पर कुछ न कुछ अवश्य लिखा है । पहले तो हर पत्र-पत्रिकाएं इन पर्व-त्यौहारों पर कुछ-न- कुछ साहित्यिक सामग्री अवश्य प्रकाशित किया करती थीं और अग्रिम रूप से पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ इनकी बुकिंग हो जाया करती थी, अब लगभग सारी बड़ी पत्रिकाएं बंद हो चुकी हैं या बंद होने की कगार पर हैं । इंटरनेट या सोशल मीडिया पर सामग्री उपलब्ध हैं, इच्छुक पाठक जब इन तक पहुंचना चाहता है तो अनेक लुभावने विज्ञापन राह के रोड़े बन जाते हैं । न चाहकर भी व्यक्ति इनकी गिरफ्त में आ जाता है । वह मूल कार्य भूल बैठता है । उसका भावनाएं नयी कामनाओं में उलझ जाती हैं । उसे न ही पठन का आनंद मिल पाता है न ही ज्ञान का विस्तार हो पाता है । आज कोई भी युवा अपनी बुद्धि का 10 प्रतिशत भी उपभोग नहीं कर पा रहा है । बुद्धि के बेपयोग से उसके अन्य अंग भी प्रभावित हो रहे हैं ; युवाओं में चिड़चिड़ापन बढ़ता जा रहा है, याददाश्त कमजोर हो रही है, बुद्धि अपना विवेक खोती जा रही है, आंखें दृष्टि खोती जा रही हैं, शरीर अपना संतुलन खो रहा है । किताबें इन सबसे भी बचाती हैं, समाधान भी सुझाती है । ज्ञान का भरपूर उपयोग करना सिखाती हैं । कल्पनाओं के नये आसमां में उड़ना सिखाती हैं । क्यों घरों में किताबों की जगह संचार के साधन ले चुके हैं ? आज साहित्य के क्षरण का प्रमुख कारण किताबों से दूरी है । किताबें ज्ञान-विज्ञान का तो प्रमुख माध्यम हैं ही , व्यक्ति में सोच-विचार, चिंतन, शिल्प और हर व्यवधान से मुक्त होने का धरातल भी तैयार करती हैं । आज युवा इस बात को लेकर हैरान होते हैं भारतेन्दु,प्रसाद, प्रेमचंद, निराला, अज्ञेय, बच्चन, पंत, राहुल सांकृत्यायन इन सबने इतना और इतना बेहतर कैसे लिख लिया ? उत्तर एक ही है कि उनके जमाने में न इंटरनेट था न सोशल मीडिया । सिर्फ़ और सिर्फ़ किताबें थीं । ज्ञान भी वही देती थी, संस्कार भी, जीवन मूल्य भी और जीवन में सब कुछ पा लेने की शक्ति भी । किताबें ये सब कुछ ही नहीं सिखाती, वो नये दर्शन का आधार स्तंभ भी हैं । व्यक्ति के घर की शोभा भी बढ़ाती हैं और उसे सौभाग्यशाली भी बनाती हैं । जिनके घरों में या मोबाइल में किताबें हैं उनसे बड़ा कोई अमीर नहीं और जिनके घरों में किताबें नहीं, उनसे बड़ा कोई गरीब नहीं ।

रोहिणी, दिल्ली

ISSN:2583-8849